

# HISTORY (Hons) PAPER-IV

B.A - II

## FIRST WORLD WAR - CAUSES AND EFFECTS

### FIRST WORLD WAR

```
graph TD; A[FIRST WORLD WAR] --- B[ ]; B --- C[Introduction]; B --- D[Causes]; B --- E[Effects]; B --- F[Conclusion];
```

Introduction

Causes

Effects

Conclusion

**Dr. Amrita kumari**

Assistant professor

Deptt. Of History

R.N College , Hajipur

# प्रथम विश्व युद्ध

## प्रथम विश्वयुद्ध

विश्व इतिहास में 20वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध दो विश्वयुद्धों के कारण उल्लेखनीय है। विश्वयुद्ध के विश्लेषण के सन्दर्भ में प्राथमिक सवाल यही बनता है कि किस तरह से वे परिस्थितियाँ पैदा होती हैं, जिस कारण सम्पूर्ण विश्व, किसी युद्ध में शामिल हो जाए। प्रथम विश्वयुद्ध के संदर्भ में यह प्रश्न निःसंदेह एक विमर्श को आमंत्रित करता है। इस विमर्श में सार्थक निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए यह आवश्यक है कि दीर्घकालिक एवं तात्कालिक दोनों सन्दर्भों में प्रथम विश्व युद्ध के उद्भव के कारणों की पड़ताल की जाए।

## प्रथम विश्वयुद्ध के विभिन्न कारण

### आर्थिक कारण

#### साम्राज्यवाद एवं आर्थिक प्रतिस्पर्धा

18वीं सदी के मध्य से औद्योगिक क्रांति का प्रारम्भ हुआ जिससे आगे चलकर 19वीं सदी तक यूरोप के विभिन्न देश जुड़ गए। औद्योगिक क्रांति की आवश्यकताओं ने आर्थिक प्रतिस्पर्धा और इस प्रतिस्पर्धा में स्वयं को स्थापित करने में, साम्राज्यवाद को बढ़ावा मिला। ब्रिटेन, फ्रांस, रूस, जर्मनी, इटली आदि विभिन्न देशों द्वारा औपनिवेशिक विस्तार की कोशिश सक्रियता से होने लगी। इस औपनिवेशिक विस्तार में, बाद में शामिल देश थे- इटली, जर्मनी आदि। इनमें असंतुष्टि अधिक थी जिस कारण 1870 के बाद यह प्रतिस्पर्धा अत्यधिक तीव्र हो जाती है, परिणामतः विभिन्न देशों के पारस्परिक हित टकराते हैं। उदाहरणार्थ इस समय अफ्रीका एवं बाल्कन क्षेत्र उपनिवेश स्थापना या आर्थिक शोषण हेतु उपजाऊ भूमि थी। अफ्रीका में 1870 में जहाँ 10% क्षेत्रों पर उपनिवेश था, वहीं अगले 30 वर्षों में 1900 ई. में मात्र 10% क्षेत्र ही औपनिवेशिक प्रभाव से बाहर था। अफ्रीका के बंटवारे में सबसे अधिक फायदा इंग्लैण्ड एवं फ्रांस को मिल रहा था। जर्मनी देर से पहुँचा था, इस असंतुष्टि में वह इन राष्ट्रों के विरुद्ध प्रतिक्रियावादी था। इसी तरह बाल्कन क्षेत्र में ऑस्ट्रिया एवं रूस के हित परस्पर

टकराते थे, साथ ही ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी आदि भी बाल्कन क्षेत्र के लाभों से स्वयं को जोड़े रखना चाहते थे। तात्पर्य है कि औद्योगिक क्रांति के परिवेश में आर्थिक हितों की प्रतिस्पर्धा साम्राज्यवाद को प्रसारित कर रही थी और इस कारण ऐसे तनाव की उत्पत्ति 20वीं सदी के प्रारम्भ में हो चुकी थी जो प्रथम विश्वयुद्ध की उत्पत्ति में सहायक बनी।

### राजनीतिक कारण

**विभिन्न राष्ट्रीयताओं का विकास-** 19वीं सदी यूरोप में राष्ट्रवाद के विकास की सदी मानी जाती है। इसी विकास के क्रम में विशाल फ्रांस, विशाल जर्मनी, महान स्लाव इत्यादि राष्ट्रीयताएं विकसित हुईं जिनकी सीमाएं किसी देश विशेष तक सीमित नहीं थी और इससे तनावों का उत्पन्न होना स्वाभाविक था। सर्बिया (बाल्कन क्षेत्र) वृहत्तर बाल्कन राष्ट्र चाहता था तो रूस अखिल स्लाव देश चाहता था जिसका विरोध अखिल जर्मनवाद से था। यही नहीं राष्ट्र आधारित हित तीव्र राष्ट्रीयता को विकसित कर रहे थे; जैसे फ्रांस के लिए एल्सॉस-लॉरेन की मांग किसी क्षेत्र की मांग नहीं, बल्कि पूरे फ्रांस के लिए राष्ट्रीय मांग थी और उसे जर्मनी से वापस लेना राष्ट्रीय अपमान को समाप्त करना था।

**कूटनीतिक संधियाँ, उपसंधियाँ, गुप्तसंधियाँ-** प्रथम विश्वयुद्ध के कारणों के पीछे विभिन्न कूटनीतिक संधियों की महत्वपूर्ण भूमिका थी। मोटे तौर पर बड़ी कूटनीतिक संधियाँ थीं जो गुटबंदी के रूप में दिखाई पड़ती हैं। पहला, गुट धुरी राष्ट्रों या केन्द्रीय शक्तियों या त्रिवर्गीय संधि का था जिसमें जर्मनी, ऑस्ट्रिया, हंगरी, तुर्की, बुल्गारिया आदि थे। इस गुट का विकास क्रम इस प्रकार है :-

**प्रथम गुट-** सर्वप्रथम बिस्मार्क ने फ्रांस के विरोध के तहत 1872 ई. में त्रिराष्ट्रों की संधि की जिसमें जर्मनी, ऑस्ट्रिया एवं रूस शामिल थे पर बाद में ऑस्ट्रिया एवं रूस के हित टकराए जिस कारण रूस अलग हो गया और 1882 ई. में नई संधि हुई जिसमें जर्मनी, ऑस्ट्रिया एवं इटली शामिल थे। इसी संधि को त्रिवर्गीय संधि कहा गया

(हालांकि इटली ने प्रथम विश्व युद्ध के प्रारम्भ के समय स्वयं को इस गुट से अलग कर कुछ क्षेत्रों के लालच में दूसरे गुट में शामिल हो गया, साथ ही इटली ने संधि के बाद भी कभी भी ऑस्ट्रिया एवं जर्मनी के साथ लड़ाई नहीं लड़ी)। इस बड़ी संधि के अलावा ऑस्ट्रिया एवं जर्मनी ने 1879 ई. में उपसंधि की। साथ ही इटली ने प्रथम विश्वयुद्ध के साथ दूसरे गुट से गुप्त संधि की।

**दूसरा गुट** - इस गुट में इंग्लैंड, फ्रांस, रूस, जापान, यूएसए, और बाद में इटली शामिल हुआ। इसकी प्रमुख उपसंधियाँ हैं:-

- 1894 ई. - फ्रांस एवं रूस
- 1904 ई. - फ्रांस एवं ब्रिटेन।
- 1907 ई. - ब्रिटेन एवं रूस।
- 1902 ई. - जापान एवं ब्रिटेन।

इस गुट में रूस ऐसा देश था (इटली की तरह) जो संधि के बावजूद अपने हितों के हिसाब से निर्णय लेता था; जैसे - 1905-06 में जर्मनी और फ्रांस के बीच 'मोरक्को संकट' हुआ तब फ्रांस को रूस ने समर्थन नहीं दिया। इसी तरह रूसी क्रांति के बाद रूस ने अचानक जर्मनी के साथ में ब्रेस्टलिटोवस्क की संधि कर स्वयं को युद्ध से अलग कर लिया। इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रथम विश्वयुद्ध के कारणों के पीछे विभिन्न संधियों, उपसंधियों एवं गुप्त संधियों की प्रभावशाली भूमिका रही।

**सैन्यवाद एवं शस्त्रीकरण**- प्रथम विश्वयुद्ध से पूर्व 1870 ई. से ही जब साम्राज्यवाद की प्रतिस्पर्धा बढ़ चुकी थी तब हमेशा एक प्रकार के युद्ध की संभावना बनी रहती थी और इसी संभावना को देखते हुए विभिन्न देशों ने अपने यहाँ अनिवार्य सैन्य सेवा कानून लागू कर दिया था। साथ ही शस्त्रीकरण की जबरदस्त होड़ जारी थी।

**20वीं सदी के प्रारम्भ में अन्तर्राष्ट्रीय अराजकता की उपस्थिति**

- 1904-05 में जापान द्वारा रूस को हराया जाना।
- 1908 में ऑस्ट्रिया द्वारा बोस्निया पर कब्जा, जिसका सर्बिया द्वारा जबरदस्त विरोध क्योंकि वह इस स्रोत पर अपना प्रभाव चाहता था।
- 1912 में प्रथम बाल्कन युद्ध एवं 1913 में द्वितीय बाल्कन युद्ध- प्रथम बाल्कन युद्ध में विभिन्न बाल्कन राज्यों बुल्गारिया, सर्बिया, यूनान आदि ने मिलकर तुर्की

को परास्त किया, पर जीत के बाद क्षेत्रों के बंटवारे को लेकर तनाव के कारण पुनः सर्बिया एवं बुल्गारिया के बीच द्वितीय बाल्कन युद्ध हुआ। इसमें सर्बिया को रूस का एवं बुल्गारिया को ऑस्ट्रिया का अप्रत्यक्ष समर्थन प्राप्त था। अन्ततः सर्बिया को इस युद्ध में सफलता मिली और अब वह खुले तौर पर उग्र रूप में ऑस्ट्रिया का विरोध करने लगा।

**अन्तर्राष्ट्रीय संस्था का अभाव**

प्रथम विश्वयुद्ध के उद्भव के पीछे किसी शक्ति आधारित अन्तर्राष्ट्रीय संस्था का अभाव भी उत्तरदायी माना जाता है, हालांकि निःशस्त्रीकरण की समस्या को लेकर जो हेग में 1899, 1907 में सम्मेलन हुए, उनमें एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था के निर्माण का प्रस्ताव था, किन्तु यह प्रस्ताव कार्यरूप में सफल नहीं हो पाया।

**प्रमुख विश्वयुद्ध का प्रभाव**

**राजनीतिक**

- विशाल साम्राज्यों का अंत (ऑस्ट्रिया, तुर्की आदि)।
- निरंकुश राजतंत्रों का अंत (जर्मनी, रूस, तुर्की)।
- लोकतंत्र का विकास।
- राष्ट्रीयता का विकास (चेकोस्लोवाकिया, यूगोस्लाविया)।
- साम्राज्यवाद का विकास।
- सशस्त्रीकरण का विकास।
- नवीनवाद - साम्यवाद, अधिनायकवाद (नाजीवाद, फासीवाद)।
- नए महत्त्व के देश (यू.एस.ए., जापान, रूस)।
- अन्तर्राष्ट्रीय संस्था की स्थापना (राष्ट्रसंघ)।
- विभिन्न राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलनों पर प्रभाव।

**आर्थिक**

- धनसम्पत्ति का हास।
- युद्ध ऋण (बाद में 1929-30 की आर्थिक मंदी)।
- मुद्रास्फीति (बाद में 1929-30 की आर्थिक मंदी)।
- अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार नीति।
- कृषि क्षेत्र - सुरक्षा की नीति।
- मजदूर स्थिति।
- बेकारी।

## सामाजिक

- जनहानि, शरणार्थी समस्या।
- गैर यूरोपीय महत्व की स्थापना।
- अल्पसंख्यक समस्या।
- स्त्री का नया रूप।

## सांस्कृतिक

- शिक्षा का हास।
- विचारधारा (राष्ट्रवादी, पलायनवादी)।
- साहित्य-नए तत्व (युद्ध विरोध, समाजवाद)।

## अन्य ( वैज्ञानिक )

- जहरीली गैस, बम, टैंक, हवाई जहाज, पनडुब्बी आदि

## पेरिस शांति सम्मेलन ( 1919 ई. )

### उद्देश्य

- स्थायी समझौता।
- सीमा निर्धारण।
- क्षतिपूर्ति।
- स्थायी शांति के उपाय (राष्ट्रसंघ)।

### विभिन्न देशों के हित एवं व्यक्तित्वों की टकराहट

- यू.एस.ए. - वुडरो विल्सन
- ब्रिटेन - लॉयड जॉर्ज
- फ्रांस - क्लीमांसो
- इटली - ऑरलेण्डो, फ्यूम बंदरगाह (एड्रियाटिक तट पर) न मिलने पर सम्मेलन से चले गए
- जापान - प्रधानमंत्री सेओजी भाग लेने गए।

### दो धाराएं

#### प्रतिक्रियावादी

- फ्रांस का क्लीमांसो (जर्मनी से प्रतिशोध एल्सॉस-लारेन क्षेत्र वापस मिले)।

#### ब्रिटेन का लॉयड जॉर्ज

- जर्मनी से नौसैनिक प्रतिस्पर्धा (आर्थिक प्रतिस्पर्धा में अपने को मजबूत करना)।
- फ्रांस इतना मजबूत न हो पाए कि प्रतिद्वंद्वी बन सके।
- हारने वालों से ज्यादा लाभ की प्राप्ति।

### शांतिवादी

यू.एस.ए. के वुडरो विल्सन ( सच्चे हृदय से शांति स्थापना का प्रयास, आत्मनिर्णय का सिद्धांत )

इसके तहत 14 सूत्रीय योजना दी, जिसे विल्सन के 14 सूत्रीय योजना के नाम से भी जाना जाता है। इन सूत्रों ने पराजित देशों से संधि के लिए बड़ी भूमिका निभाई, लेकिन संधि के दौरान इन सूत्रों की अवहेलना हुई। वास्तव में, विल्सन कूटनीतिज्ञ के रूप में अनुभवहीन थे और उनके विचार आदर्शवादी, नैतिकवादी थे।

### विल्सन के 14 सूत्र

1. राष्ट्र संघ की स्थापना
2. गुप्त संधियों का त्याग किया जाए।
3. अस्त्र-शस्त्रों की कमी की जाए।
4. उपनिवेशों के संबंध में सिर्फ औपनिवेशिक शक्तियों का ही नहीं, शासित प्रजा का भी मत लिया जाये।
5. व्यापारिक प्रतिस्पर्धा समाप्त हो।
6. सामूहिक आवागमन स्वतंत्र हो।
7. फ्रांस को एल्सॉस-लॉरेन क्षेत्र वापस दिया जाए।
8. इटली की सीमाएं राष्ट्रीयता के आधार पर निश्चित की जाए।
9. रूस की भूमि से सेनाएं हटाई जाएं।
10. ऑस्ट्रिया-हंगरी की जनता को पूर्ण स्वायत्त शासन स्थापित करने की स्वतंत्रता दी जाएं
11. तुर्की साम्राज्य के विशुद्ध तुर्की प्रदेशों पर उसकी सम्प्रभुता बनी रहे जबकि शेष क्षेत्रों पर स्वायत्त शासन स्थापित हो।
12. बाल्कन क्षेत्र से विदेशी फौज हटाई जाए।
13. स्वतंत्र पोलैण्ड राज्य का निर्माण हो।
14. स्वतंत्र बेल्जियम की प्रभुसत्ता स्वीकार हो।

### पेरिस शांति सम्मेलन की विभिन्न संधियाँ

- जर्मनी के साथ वर्साय की संधि
- ऑस्ट्रिया के साथ सेंट जर्मन संधि
- हंगरी के साथ ट्रियनों संधि
- बुल्गारिया के साथ न्यूली संधि
- तुर्की के साथ सेब्रे की संधि